

# लधु एवं बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

शोधकर्ता : ज्योति

सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंनझुंनु, राजस्थान की पीएच.डी (शिक्षाशास्त्र) 2017–2020

शोधनिदेशक

डॉ. शिवकान्त शर्मा,

सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंनझुंनु, राजस्थान, भारत

## सारांश

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था जिसकी समष्टि गाजियाबाद जनपद से कक्षा 11 के विद्यार्थी थे। विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर आधा-आधा रखते हुये 600 विद्यार्थियों को यादच्छिक रूप से चयनित करके किया गया था। ऑकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण व्यक्तिगत मूल्यों मापनी द्वारा किया गया था तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिये कक्षा –10 के प्राप्तांक को आधार माना गया। इसकी सांख्यिकी तकनीकि  $2 \times 2 \times 2$  प्रसरण विश्लेषण थी।

**मुख्य शब्द :** यादच्छिक, समष्टि, न्यादर्श, व्यक्तिगत मूल्यों, गाजियाबाद जनपद के विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि।

## प्रस्तावना

मानव समाज का इतिहास परिवार का ही इतिहास है क्योंकि मानव जीवन के प्रारंभ से ही परिवार का अस्तित्व है “परिवार” मानव समाज का एक महत्वपूर्ण समूह समिति, एवं संस्था है। अतः परिवार के प्रति सदस्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति बच्चों के व्यक्तित्व का विकास, मानव विकास व भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार के ही माध्यम से होती है जो आपसी सहयोग व समन्वय से क्रियान्वित होती है और जिसके समस्त सदस्य आपस में मिलकर अपना जीवन प्रेम, स्नेह एवं भाईचारा पूर्वक निर्वाह करते हैं। संस्कार, मर्यादा, सम्मान, समर्पण, आदर, अनुशासन आदि किसी भी सुखी-संपन्न एवं खुशहाल परिवार के गुण होते हैं। कोई भी व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है, उसी से उसकी पहचान होती है और परिवार से ही अच्छे-बुरे लक्षण सिखता है। परिवार सभी लोगों को जोड़े रखता है और दुःख-सुख में सभी एक-दूसरे का साथ देते हैं। कहते हैं कि परिवार से बड़ा कोई धन नहीं होता है, पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं होता है, मां के आंचल से बड़ी कोई दुनिया नहीं, भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं, बहन से बड़ा कोई शुभ चिंतक नहीं इसलिए परिवार के बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। एक अच्छा परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## परिवार का अर्थ एवं परिभाषा :-

हिन्दी भाषा का शब्द ‘परिवार’ अंग्रेजी भाषा के शब्द ‘फैमिली’ का रूपांतरण है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार स्त्री और पुरुष का एक ऐसा समूह माना गया है जिसका निर्माण विवाह संबंधों, रक्त संबंधों या गोद लेने की व्यवस्था से है। एक जैविकीय इकाई के रूप में एक परिवार वह समूह है जिसमें स्त्री व पुरुष को यौन संबंधों की स्थापना तथा संतान पैदा करने के लिए समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है। एक सामाजिक इकाई के रूप में परिवार स्त्री-पुरुष का एक ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त या दत्तक संबंधों के आधार पर निर्मित होता है।

**किंग्सले डेविस के अनुसार** – “परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त के आधार एक–दूसरे से संबंधित हैं तथा परस्पर नातेदार हैं।”

**मैकाइवर एवं पेज** – “परिवार एक ऐसा समूह है जो यौन संबंधों पर आश्रित है तथा इतना छोटा और शक्तिशाली है कि संतान के जन्म और पालन–पोषण की व्यवस्था करने की क्षमता रखता है।”

**इलियट तथा मैरिल** – परिवार को एक जैविक सामाजिक इकाई माना है। इनके मतानुसार – “परिवार पति–पत्नी एवं बच्चों से निर्मित एक जैविक सामाजिक इकाई है।”

**बर्गेस और लॉक के अनुसार** – “परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद लेने के संबंधों द्वारा संगठित है। एक छोटी सी गृहस्थी का निर्माण करते हैं और पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन के रूप में परस्पर अन्तःक्रियाएँ करते हैं।”

### **परिवार के प्रकार :**

परिवार दो प्रकार के माने गए हैं—

(1) बृहद् परिवार (2) लघु परिवार,

### **(1) बृहद् परिवार :**

बृहद् ;संयुक्तद्व का अर्थ होता है—सम्मिलित, इकट्ठा। वह परिवार जिसमें दादा—दादी, माता—पिता, चाचा—चाची व उनकी संतानें मिलकर रहती हैं, उसे बृहद् परिवार कहते हैं। इसका आधार आपसी प्रेम व मेल—मिलाप होता है।

परिवारजन बड़ों की आज्ञा का पालन करते हैं। बृहद् परिवार की कानूनी व समाजशास्त्रीय व्याख्याओं में अंतर होने के कारण इसकी भिन्न—भिन्न परिभाषाएँ की गई हैं। कानूनी दृष्टिकोण के अनुसार “एक बृहद् परिवार में वे सभी व्यक्ति सम्मिलित किए जाते हैं जो एक सामान्य पूर्वज के वंशज होते हैं। इनके अतिरिक्त, उसमें इनकी पत्नियाँ तथा अविवाहित लड़कियाँ भी आती हैं। ऐसे परिवारों की सम्पत्ति भी बृहद् होती है।”

प्रसिद्ध समाजशास्त्री डॉ. इरावती कर्वे के अनुसार, “एक बृहद् परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते हैं एक ही रसोई का पका खाना खाते हैं, जो सामान्य सम्पत्ति के अधिकारी होते हैं, जो सामान्य पूजा में भाग लेते हैं तथा जो परस्पर एक—दूसरे से विशिष्ट नातेदारी से संबंधित होते हैं।”

**श्री जे.पी. देसाई** के अनुसार, “हम ऐसे घराने को बृहद् परिवार कहते हैं जिसमें पीढ़ी की गहराई परिवार की अपेक्षा अधिक लम्बी होती है तथा जिसके सदस्य एक—दूसरे की सम्पत्ति, आय एवं पारस्परिक अधिकारों एवं दायित्वों के आधार पर संबंधित होते हैं।”

**जोली** के अनुसार, “एक बृहद् परिवार में न केवल माता—पिता एवं बच्चे, भाई तथा सौतेले भाई, साझी सम्पत्ति पर निर्वाह करते हैं। अपितु इसमें कभी—कभी कई पीढ़ियों के संगोत्र संबंधी एवं पूर्वज भी शामिल होते हैं।”

### **(2) लघु परिवार :**

लघु परिवार वह है जिसमें पति—पत्नी व उनकी अविवाहित संतानें रहती हैं। संतानें विवाहोपरांत अपने नए परिवार बना लेते हैं। ऐसे परिवार में सदस्य संख्या कम होती है। जिससे उनमें आपसी विश्वास की भावना प्रबल होती है। एक परिवार नौकरी पेशे वाले व्यक्ति को अधिक आकर्षित करते हैं।

लघु परिवार में व्यक्ति आर्थिक स्वतंत्रता के साथ—साथ अधिक सुख—सुविधा भी प्राप्त करता है। नगरों में लघु परिवार बहुतायत में पाए जाते हैं। “परिवारिक संगठन की ऐसी आधारभूत इकाई जिसकी रचना विवाहित दम्पत्ति तथा उनकी संतानों द्वारा होती है। उसे नाभिक परिवार कहते हैं।”

**किंग्सले डेविस और वारनर** ने लघु परिवार की संरचना की परिभाषा ‘कर्ता की स्थिति, आयु, कर्तव्य, पालन—पोषण आदि के आधार पर दो दृष्टिकोण दिए हैं। जनक मूलक परिवार जन्मित परिवार इसमें कर्ता पिता अथवा संतान रूप में होता है।”

लघु परिवार की उत्पत्ति के मुख्य कारण औद्योगिकरण व नगरीकरण है। ग्रामीण बेरोजगारी से तंग होकर युवक शहरी उद्योगों में काम करने हेतु आए तथा वहीं पर बस गए। उनका परिवेश बदल गया। नगरों में उनकी रोटी की परेशानी समाप्त हो गई। इस तरह औद्योगिकरण से जहाँ व्यक्ति को रोजगार प्राप्त हुआ, वहीं उसने परम्परागत बृहद् परिवार की प्रथा को भी तोड़ा है। अतः लघु परिवार व्यक्ति के विकास मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न करता है तथा इस दिशा में काफी हद तक सफल भी होता है।

परिवार की आर्थिक दशा उसे बहुत अधिक प्रभावित करती है। व्यक्ति जीवनभर अर्थ के झमेलों में उलझा रहता है तथा परिवारों में अर्थ को लेकर ही अत्यधिक झगड़े होते हैं। इस तरह आर्थिक पहलू जहाँ परिवार को मजबूती देता है वही परिवार को विशृंखित करने में भी सहयोग करता है।

शुक्लजी ने अपने समस्त उपन्यासों में लघु परिवार को चित्रित किया है। 'सूनी घाटी का सूरज' में इन्होंने रामदास मुंशी जी के परिवार को दर्शाया है। रामदास के परिवार में रामदास और उसके बापू हैं। वहीं मुंशी जी के परिवार में मुंशीजी उनके पिताजी तथा उनकी पत्नी हैं। अज्ञातवास में रजनीकांत के परिवार में वह तथा उसकी बेटी प्रभा हैं। रागदरबारी में खन्ना मास्टर का परिवार है जिसमें वह तथा उसकी पत्नी रहती है। उनके सामाजिक सम्पर्क सीमित हैं। दूसरा इस उपन्यास में गायदीन का परिवार है। जिसमें वह अपनी जवान-बेटी तथा विधवा बहन के साथ रहता है। गायदीन के सामाजिक सम्पर्क सीमित नहीं हैं। वह गांव के इंटरमीडिएट कॉलेज की प्रबंध समिति का सदस्य है तथा उसकी विधवा बहन, बेला पर निगरानी रखती है तथा उसे गायदीन की अनुपस्थिति में सामाजिक संरक्षण प्रदान करती है। तीसरा परिवार कुसहर प्रसाद का है जिसमें वह और उसका बेटा छोटे पहलवान रहता है दोनों ही सामज के लोगों के बीच उठते बैठते हैं और सामाजिक कार्यों में अपनी भागीदारी देते हैं। चौथा लघु परिवार रामाधीन भीखमखेडवी का है जिसमें वह और उसका चचेरा भाई रहता है इस परिवार के सामाजिक सम्पर्क काफी व्यापक और प्रभावशाली है।

### शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि शब्द शिक्षा तथा उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा से यहाँ तात्पर्य पुस्तकीय अध्ययन तथा उपलब्धि का तात्पर्य पुस्तकीय अध्ययन से प्राप्त ज्ञान की प्राप्ति की सफलता से है। सामान्य रूप से शैक्षिक उपलब्धि से उस निपुणता से अर्थ लगाया जाता है जो विद्यालयों या महाविद्यालयों के विषयों में किसी विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में विद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी की मानसिक क्षमता का यह यथार्थ स्वरूप है। वास्तव में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त प्रतिशत अंकों या श्रेणी द्वारा नापा जाता है।

प्राचीन सभ्यताओं में भी शैक्षिक उपलब्धि के महत्व को समझते हुए एक निष्चित समय तक शिक्षा प्रदान करने के पश्चात विद्यार्थियों की परीक्षा ली जाती थी तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर ही उनकी योग्यता को प्रमाणित किया जाता था। प्रणाली में अंतर होते हुए आज भी विद्यार्थियों की योग्यता को परीक्षा में प्राप्त उनकी उपलब्धियों के आधार पर ही प्रमाणित किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि द्वारा हमें यह पता चलता है कि विद्यार्थी क्या और कितना सीख चुका है तथा वह किसी कार्य को कितना अच्छी तरह से कर सकता है। शैक्षिक उपलब्धि हमें यह बताती है कि एक छात्र शिक्षा के क्षेत्र में कितना व्यवहारिक ज्ञान उपलब्ध कर चुका है। बालक जिस प्रकार के परिवार में रहता है वह उसका प्रत्यक्षीकरण करता है तथा प्रत्यक्षीकरण की क्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। जिन परिवारों की सुख-शान्ति, परिवारिक कलह, मतभेद, पृथक्करण तथा तलाक आदि कारणों से भंग हो जाती है उन परिवारों के बच्चे अधिक शिक्षार्जित नहीं कर पाते हैं। जो माता-पिता अपने बच्चों के सुख-दुख में प्रतिभाग करते हैं तथा उनके साथ आनन्दमयी, समय व्यतीत करते हैं उनके बच्चों की अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने की संभावना रहती है। सामान्यतः यह देखा गया है कि भारत वर्ष में जो माता-पिता निर्धन व अशिक्षित हैं वे अपने बच्चों के भविष्य के बारे में नहीं सोचते हैं, वे अनुभव करते हैं कि बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व उन्हें स्कूल में प्रवेश कराने पर ही समाप्त हो जाता है। बच्चों की शिक्षा पर उचित ध्यान न देने के कारण उनकी शैक्षिक प्रक्रिया असफल होने लगती है फलस्वरूप उनकी

उपलब्धि प्रभावित होती है। जो बालक घर से अनिच्छापूर्वक स्कूल जाता है या धकेला जाता है, वह बालक संवेदन शून्य रहता है। इससे बालक की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न रहता है। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं – माता – पिता का अशिक्षित होना, माता – पिता द्वारा बालक की शिक्षा में रुचि न लेना या आर्थिक अभाव का होना।

### 1971 में एनेस्टैसी

सक्रियात्मक रूप से उपलब्धि की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :–

शैक्षिक योग्यता विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के उच्च स्तर का अध्यापकों द्वारा किया गया वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थी शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयत्न में और उसे पुनः अभिव्यक्त करने में साथ ही उनके स्तर या आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्य की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है और जिसका प्रमाण उसकी त्रैमासिक परीक्षा में उनके द्वारा किये गये कार्यों से मिलता है।

### 1968 में टायलर:

अधिक व विशिष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक योग्यता अपनी शैक्षिक परीक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अंक का समग्र योग होता है।

### 1971 में फ्रीमैन

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण यह अभिकल्प है जो कि एक विशेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान या कौशल का मापन करता है।

### 1967 में सुपर

एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह बात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने नया और कितन सीखा तथा कोई कार्य वह कितनी भली-भाँति कर लेता है।

### व्यक्तिगत मूल्य :-

मूल्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है उपयोगिता, वांछनीयता, महत्व। हम जानते हैं कि प्रत्येक समाज के अपने कुछ विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त और व्यवहार के मापदण्ड होते हैं। जब कोई व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकृत इन विश्वासों, आदर्शों सिद्धान्तों और व्यवहार के माप दण्डों को उपयोगी मानता है, वांछनीय और महत्वपूर्ण मानता है और इसके अनुसार व्यवहार करता है तो वे उसके लिए मूल्य हो जाते हैं। मूल्य एक अमूर्त प्रत्यय है, का सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है। यह उसके व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करता है।

हर मनुष्य जीवन में समय के साथ सीखता है और उसी समय के साथ सीखने को अनुभव कहा जाता है और जैसे-जैसे समूह बढ़ता है अनुभव भी बढ़ने लगता है और मैं अनुभव सामान्य सिद्धान्तों पर आधारित होते हैं। और एक नई दिशा प्रदर्शित करते हैं। यही दिशा व्यक्ति के मूल्यों का निर्धारण करती है।

**बूनर और गुडमैन** ने भी मूल्यों को व्यवहार का एक आवश्यक कारक माना है अर्थात् मनुष्य के व्यवहार पर उसके मूल्यों का बहुत प्रभाव पड़ता है। वे कहते हैं –

मूल्यों का जीवन में जो कार्य है, उसी के आधार पर उसकी उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है

## **आलपोर्ट के अनुसार :-**

मूल्य व क्रिया है जो किसी उद्दीपन से उद्दीप्त होती है।

### **सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**

**2012 दीपशिखा** ने परिणाम पाया कि मनोसामाजिक पर्यावरण शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

**2012 येल्लाही** के अध्ययन परिणामों में लड़के व लड़कियों के समायोजन और शैक्षिक – उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

**2013 हाफिज अहमद बिलाल** उपरोक्त डेटा विश्लेषण और चर्चा के प्रकाश में। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि दोनों पारिवारिक प्रणालियों का शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ महत्वपूर्ण संबंध है। दोनों, परमाणु और संयुक्त परिवार प्रणाली, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव। परमाणु और संयुक्त दोनों में, दोनों परिवार प्रणालियों में माता–पिता की भूमिका परिवार के किसी अन्य सदस्य की तुलना में अधिक प्रभावशाली होती है। छात्रों को माता–पिता की भागीदारी के माध्यम से प्रोत्साहन और आत्मविश्वास मिलता है। माता–पिता की भागीदारी और ध्यान महत्वपूर्ण कारक हैं जो छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

**2015 ओनेस्टो लौमो एण्ड कैशलीमा जे०पी०** छावगां कुछ शोधों द्वारा इंगित होता है कि, “पारिवारिक वातावरण में माता–पिता की शैक्षिक योग्यता, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, घर की अवस्थिति का सीधा प्रभाव भी पाया गया।”

**2016 यादव,** ने परिणाम पाया कि शैक्षिक उपलब्धि व विद्यालयी पर्यावरण परस्पर घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं। यादव, ने परिणाम पाया कि शैक्षिक उपलब्धि व विद्यालयी पर्यावरण परस्पर घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं।

**2016 ढाका, सुरेश** ने ‘शिक्षा, चिकित्सा एवं अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मूल्यों, सृजनात्मकता व समायोजन पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन’ शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के समायोजन में अन्तर पाया गया। गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन व शैक्षिक समायोजन की दृष्टि से ग्रामीण छात्राएं अधिक सजग पायी गयी। उनका ग्रामीण वातावरण शहरी भीड़–भाड़ से दूर शान्त वातावरण में रहने वाला होता है। अतः वे घरेलू व शैक्षिक समायोजन की तरफ अधिक ध्यान दे पाती हैं। भावात्मक दृष्टि से शहरी छात्राएं अधिक समायोजित होती हैं।

## **अध्ययन का महत्व**

वर्तमान समय के विद्यार्थियों के मूल्यों में गिरावट बढ़ती जा रही है। बच्चों के अन्दर अनुशासन हीनता, लापरवाही और उद्दंडता जैसे दुर्गुणों का समावेश होता जा रहा है। इसका कारण पारिवारिक सम्बन्धों को माना जा सकता है। ऐसे परिवार जिनके बच्चों में ये प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं। ऐसा देखा गया है कि उन माता–पिता में पारिवारिक समायोजन ठीक नहीं पाया गया। मूल्यों में गिरावट का प्रभाव और पारिवारिक सम्बन्धों में कटुता का प्रभाव सीधे–सीधे उनके बच्चों पर देखा जाता है। ऐसे बालक परिवार में समायोजन नहीं कर पाते हैं। इसका प्रभाव उनकी अध्ययन एवं अध्ययन आदतों पर विशेष रूप से पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि छात्रों की इन प्रवृत्तियों एवं आदतों का पता लगाया जाये और उनकी कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिया जाये।

प्रत्येक शोध अध्ययन का कोई न कोई महत्व अवश्य होता है। समस्या के महत्व को देखकर ही उसका चयन किया जाता है, जैसा कि इस अध्ययन के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस अध्ययन के अन्तर्गत लघु एवं बृहद् परिवारों के विद्यार्थियों में पारिवारिक सम्बन्धों का सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तिगत मूल्यों को जानने का प्रयास किया गया। वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में समाज के अन्तर्गत लघु एवं बृहद् परिवारों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का चयन करना है। जिनका मनोवैज्ञानिक रूप से विकसित, समर्पित भाव, उनके व्यक्तिगत मूल्यों का सर्वांगीण विकास करना है।

## समस्या का कथन:

‘लघु एवं बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन’

### अध्ययन के उद्देश्यः—

1. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।
2. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का व्यक्तिगत मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है।
3. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।
4. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का व्यक्तिगत मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

### परिकल्पनाये

1. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
  2. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।
  3. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
  4. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।
1. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अनुपातों की गणना की गई थी। उसी के लिए डेटा को तालिका संख्या .1 मे प्रस्तुत किया गया है।

### तालिका संख्या 1

कत्रि250

कं सं.	लघु परिवार	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
1	पारिवारिक सम्बन्ध	300	115	28	2.87	.01 स्तर पर सार्थक
2	शैक्षिक उपलब्धि	300	53.17	14.92		

## विश्लेषण

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है की लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 115 एवं 53.17 दर्शाये गये तथा मानक विचलन क्रमशः 28 एवं 14.92 दर्शाये गये हैं तथा इनके आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 2.87 प्राप्त हुआ है। 250 (क) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान सारणी में दिए गए दोनों मानों से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृति की गई।

- लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अनुपातों की गणना की गई थी। उसी के लिए डेटा को तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत किया गया है

	लघु परिवार	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
1	पारिवारिक सम्बन्ध	300	115	28		.01
2	व्यक्तिगत मूल्यों	300	55	20	7.66	स्तर पर सार्थक

## तालिका संख्या 2

df = 250

## विश्लेषण

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है की लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों एवं उनकी व्यक्तिगत मूल्यों के मध्यमान क्रमशः 115 एवं 55 दर्शाये गये तथा मानक विचलन क्रमशः 28 एवं 20 दर्शाये गये हैं इनके आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 7.66 प्राप्त हुआ है। 250 (क) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान सारणी में दिए गए दोनों मानों से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृति की गई।

- बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अनुपातों की गणना की गई थी। उसी के लिए डेटा को तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत किया गया है

## तालिका संख्या 3

क्रं सं.	बृहद् परिवार	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
1	पारिवारिक सम्बन्ध	300	115	28		.05
2	शैक्षिक उपलब्धि	300	53.17	14.92	1.94	स्तर पर सार्थक

df =250

### विश्लेषण

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है की बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 115 एवं 53.17 दर्शाये गये तथा मानक विचलन क्रमशः 28 एवं 14.92 दर्शाये गये हैं इनके आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.94 प्राप्त हुआ है। 250 (क) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृति की गई। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

### 4. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अनुपातों की गणना की गई थी। उसी के लिए डेटा को तालिका संख्या 4 में प्रस्तुत किया गया है

### तालिका संख्या 4

क्रं सं.	बृहद परिवार	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
1	पारिवारिक सम्बन्ध	300	115	28	2.25	.01 स्तर पर सार्थक
2	व्यक्तिगत मूल्यों	300	55	20		

कत्रि250

### विश्लेषण

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट है की बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों एवं उनकी व्यक्तिगत मूल्यों के मध्यमान क्रमशः 115 एवं 55 दर्शाये गये तथा मानक विचलन क्रमशः 28 एवं 20 दर्शाये गये हैं इस आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 2.25 प्राप्त हुआ है। 250 (क) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान सारणी में दिए गए दोनों मानों के बराबर हैं। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृति की गई। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

### अध्ययन निष्कर्ष

1. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि आज के इस आधुनिक युग में धटते हुए परिवारों के सदस्य अपने व्यस्त जीवन के कारण छात्रों की सृजनशीलता पर अधिक ध्यान नहीं दे पाते। जिसके कारण जो छात्राएं सृजनशील हैं। भी तो उनकी सृजनशीलता निष्क्रिय रहती है और वह अपनी किसी भी क्रिया को गतिशीलता से नहीं कर सकती है।

2. लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है और उनके परिवार की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव से अध्ययन से जो परिणाम प्राप्त हुये। उनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार में सदस्यों की कमी होने के कारण माता—पिता का पूर्ण ध्यान छात्रों पर केंद्रित होता है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहायता प्रदान करता है और वह अपने पारिवारिक संबंधों को मजबूत भी बनाने में सहायक है।

3. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पड़ता है उनके प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बृहद परिवारों के माता—पिता अधिक समय छात्राओं को नहीं दे पाते। क्योंकि परिवार बड़ा होता है तो जिम्मेदारी के कारण वह ध्यान नहीं दे पाते। जो छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है समय न होने के कारण छात्रों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले अनेक कारण हो सकते हैं 1. माता—पिता के पास समय का ना होना 2.बड़ा परिवार होने के कारण कभी किसी से तो कभी किसी से पढ़ना पड़े जिसके कारण उनका ध्यान केंद्रित नहीं हो पाता 3.आर्थिक कमी का होना।

4. बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार की मुखिया की जिम्मेदारी होती है कि वह परिवार सभी सदस्यों की भावनाओं का, शारीरिक गुणों का, मानसिक गुणों का विकास करें चाहे वह सदस्य छोटा हो या बड़ा इसी प्रकार उनके व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर व्यक्तिगत गुणों को विकसित करने की क्षमता परिवार के मुखिया में होनी चाहिए जिसका प्रभाव छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों पर पड़ता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 2012 दीपशिखा ‘इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की प्रशासन पद्धति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध’लघुशोध—प्रबन्ध, शिक्षा संकाय सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय जौनपुर.
2. 2012 येल्लाही,‘स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमिक अचीवमेंट ऑन हाई स्कूल स्टूडेंट इंटरनेशनल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरनेशनल ऑफ साइंस एंड रिसर्च पब्लिकेशन,आईएसएस नंबर 22— 23
3. 2013 हॉफिज आईएसएस नंबर 23 — 953 सितंबर 2013 201 सेक्सी यादव शोध पत्रिका एंड डीएफआर वॉल्यूम टू जौनपुर
4. 2015 ओनेस्टो, लौमो एण्ड कैशलीमा, जे०पी० इन्फलुएन्स ऑफ होम इनवायरमेण्ट ऑन स्टूडेन्ट्स एकेडेमिक परफार्मन्सइन सेलेक्टेड सेकेण्डरी स्कूल्स इन अएसा म्यूनिसिपलटी, जर्नल ऑफ नोबेल एप्लाइड साइंसेंस, 15, पृ० 1049—1054
5. 2016 यादव, शिवकुमार ‘विद्यालयी पर्यावरण व शैक्षिक उपलब्धि’ शोध पत्र NDER vol.2 जौनपुर
6. 2016 ढाका , सुरेश – पी – एच . डी . शोध प्रबन्ध , जे . जे . टी . विश्वविद्यालय , चुडैला झुंझनूं , राजस्थान